E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(2): 110-111
Received: 22-01-2019
Accepted: 24-02-2019

डॉ० रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

मैथिली साहित्यपर राजकमलक प्रभाव

डॉ० रौशन कुमार यादव

सारांश
संसार परिवर्तनशील होइत अछि। एकरा ईहो कहि सकै छी जे परिवर्तने संसारक नियम थीक। संसारक एहि परिवर्तनक निमयक असरि साहित्योपर पडैत अछि, आ साहित्यमे सेहो परिवर्तन होइत रहल अछि। भाषासेहो एकर अपवाद नहि। संस्कृतकेँ देव भाषा कहल जाइत अछि, अर्थात् संस्कृत देवताक भाषा थिक। संस्कृतकेँ भारतीय भाषाक जननी सेहो कहल गेल अछि। अपना समयमे अर्थात् आदिकालसँ मध्यकालमे संस्कृत एकटा अकबाली भाषाक रूपमे देखाइ पडैछ। संस्कृतक पंडितलोकनि संस्कृत छोड़ि आन सभ भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छलाह, ओ लोकनि मैथिलीमे लिखब वा पढ़ब हीनक बुझैत छल। विश्वक इतिहासमे एहन देखल गेल अछि जे कोनो देश अथवा भाषा इतिहासमे कोनो ने कोनो रूपमे क्रान्तिकारी पुरुष जन्म लैत रहल छथि।

प्रस्तावना
राजकमलक जन्म महाकवि विद्यापतिक रूपमे मैथिली भाष साहित्यमे भेल अछि। विद्यापति संस्कृत भाषासँ लोकके विरक्त होइत आ अपन देशक भाषा दिस आसक्त होइत देखलनि। ओ लिखैत छथि–

"सक्कय वाणी बहुअन भाबइ
पाउँअ रस को मम्म न पाबइ
देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तब तइसन जम्पओ अवहट्टा [1]।

महाकवि विद्यापति ई पद मैथिली भाषा आ साहित्य लेल एकटा आधार मानल जाइत अछि। एकरे परिणाम स्वरूप आइ देशक सभ क्षेत्रीय भाषा अपन–अपन क्षेत्रक लोकक लेल एकटा प्राण सदृश भऽ गेल अछि। मुदा विद्यापतिक समयक साहित्यक आवश्यकता किछु छल विद्यापतिक रचना मात्र पदक रूपमे लिखल गेल। ओहि सभमे श्रृंगार रसक प्रचुरताक संगहि भक्ति मुख्य अछि। साहित्यक दृष्टिकोणसँ विद्यापतिक ई रचना सभ अबैत–अबैत हरिमोहन झाक रचनाक बहुमूल्य योगदानसँ मैथिलीक एकटा विशाल पाठक समुदाय बनि चुकल छल। महाकवि विद्यापतिक रचनाक प्रभावसँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्धि आ लोकप्रियता प्राप्त भऽ चुकल छल। आब मैथिली साहित्यक धारामे जन–जीवनकेँ स्थान भेटब आवश्यक भऽ गेल छल। ओना जन–जीवनक चित्र विद्यापतिएक समयसँ 'कीर्तिलता' आ 'कीर्तिपताका'मे भेटैत अछि, मुदा से अछि अवहट्ठमे।
राजकमल अपन कवितामे महाकविकेँ देश–दशाक सूचना दैत छथि आ पुनः अवतरित होयबाक आह्वान सेहो करैत छथि–

"आबह मिथिला मे पुनि आबह बनि जनजीवन सूर्य
महाराज शिवसिंह के हे सेनापति, जगबह क्रान्तिक तूर्य्य
× × × ×
देश जरइए लोक मरइए, वस्त्र भेटए नइँ मुठियो भरि अन्न
× × × ×
राधा तोहर बेचि रहल छथि देह, कृष्ण तोहर अवसन्न [2]।

राजकमलक कविता हिनकर अनुभूतिक प्रसार थिक, अपन अर्थक स्वयं टीकाकार आ व्याख्याकार थिक, क्षण विशेषक अभिव्यक्तिक चित्र थिक, आ कतहु–कतहु भावुक प्रेमक चित्रांकन थिक, इएह हिनकर स्वीकारोक्ति सेहो थिक। अनुभूतिक प्रमाणिकता क्रान्तिकारी उपलब्धि थिक। अदौकालसँ चलि आबि रहल कविताक पुरान परिपाटी जे एकटा सीमामे बान्हल छल तकरा राजकमल 'स्वरगंधा'क रचना कऽ तोड़लनि, आ नव कवि लोकनि 'स्वरगंधा'क लेखन शैली अपनौलनि। ई बात भिन्न जे राजकमल चौधरीक रचनाकेँ अनेक कारणसँ विवादास्पद बना देल गेल।

हिनक विवादास्पद विषयक जतेक कारण अछि, तकर चित्रण करब, अपन मूल बाटसँ भटकब होयत, मुदा एतबा कहब उचित होएत जे प्राचीन काव्यधाराक अवरोधक बनि एकटा नवीन काव्यधाराक निर्माण करब हिनकर ततेक सशक्त, प्रामाणिक आत्मानुभूति छल जे हिनक काव्यात्मक विरोध करब हिनका बादक कवि वा समकालीन किनकोमे ई क्षमता नहि भेलनि।

सत्यकेँ नुकायब असम्भव होइत अछि, फूसिकेँ कतबो दोहराओल जाय ओ सत्यमे नहि बदलि सकैत अछि। उदाहरण लेल आगिकेँ केहनो मोट कपड़ामे बान्हि लेल जाय, मुदा ओ बान्हल नहि रहैछ, कपड़ा जरि जाइत अछि। तहिना 'स्वरगंधा' सत्य थिक, आगि थिक, मैथिलीक कतेको कवि एहि रचनाक उपहास कयल मुदा इतिहासमे एहि रचना अयबाक छलै ते क्यो एकरा रोकि नहि सकल। राजकमलक अनुभूति प्रामाणिक, असली आ परिपक्व छल लोक एकरा नकारि नहि सकल हिनक लेखन धर्मिता, प्रतिभा, परिश्रम आ अन्तरूप्रेरणा अद्भुत कल्पनाशीलताक त्रिवेणी थिक। एकरा लोक मोड़ि नहि सकल। जेना वर्षाकालीन समस्त नदी–नाला अनेक अवरोधकेँ सहैत जखन गंगा वा कोनो नदीमे खसैत अछि तखन ओ ओही धारामे बहैत अछि। राजकमलक साहित्यक धाराक पराक्रम किछु एहने सन प्रतीत होइत अछि।

राजकमल चौधरी मैथिली साहित्यक गौरव मानल जायवला आधुनिक रचनाकारमे अपन नामकँ अगुआकऽ रखने छथि। रचनाक दृष्टिकोणसँ राजकमल मैथिली साहित्यमे 'स्वरगंधा' नामक कविता संग्रह लऽकऽ अपन नामकँ साहित्य मध्य रखने छथि। राजकमलक प्रायः सभ रचना तत्कालीन समाजक नग्न रूपक प्रतीक थीक। फलस्वरूप हिनक रचना सभ कालजयी आ काल सापेक्ष भेल।

राजकमल अद्वितीय प्रतिभाक रचनाकार छलाह। हिनक साहित्यसँ प्रभावित मैथिलीक कतेको साहित्यकार हिनक रचनाक गुणगान करैत अपन उद्गार व्यक्त कयने छथि। मैथिली साहित्यक हास्य–व्यंग्य सम्राट प्रो० हरिमोहन झा हिनक काव्यकेर ताजमहल कहलनि, प्रतिभाक पुंज, वाणीक दिवंगत पुत्र सबल कहलनि, आ अगणित मानसमे रहयवला रचनाकार कहलनि–

''सुकुमार काव्यकर ताजमहल
प्रतिभाक पुंज हे राजकमल
वाणीक दिवंगत पुत्र सबल
अगणित मानसमे रहब बनल
हे अमर हमर शुचि राजकमल [3]।

राजकमलक हेतु हरिमोहन झाक ई उद्गारक शब्द राजकमलक रचनाक प्रभावकेँ स्पष्ट स्वरूपसँ देखबैत अछि। तहिना यात्रीजी सेहो हिनका अद्भुत व्यक्तिक संज्ञा देलनि अछि, जाहिसँ हिनक व्यक्तित्व आओर कृतित्वक प्रखर स्वरूप सोझा अबैत अछि–

''बाहर छलनामय, भीतर–भीतर थे निश्छल
तुम तो थे अद्भुत व्यक्ति, चौधरी राजकमल
इस–उस पीढ़ी के लिए विरोधाभास प्रबल
तुम चर्चाओं के केन्द्र बिन्दु, तुम नित्य नवल [4]।

राजकमल चौधरीक अपना जीबैत हुनक प्रायः सभ मैथिली रचना लेल उपहास कयल गेलनि, आ हिनका परोक्ष भेलापर हिनकर रचनाक गुण–गान होयब शुरू भऽ गेल। ओना अपना मिथिलामे एकटा कहबीयो छैक जे ''मुइनहि गुण आ कि पड़ेनहि गुण'' एहि कहबीक प्रभाव पूर्ण रूपसँ राजकमलपर पड़ेत बुझाइत अछि। किएक तऽ ई सत्य अछि जे सभसँ फराक ढंगसँ कयल काज, आ सही दिशामे कयल काज देरिएसँ सही, मुदा ओ अपन रंग जरूर अनैत अछि। राजकमलक प्रति एही नीक–बेजायक दृष्टिकोणसँ राजकमलकेँ भरोस दैत हसराज अपन पत्रमे लिखैत छथि ''क्रान्तिक गीत गउनिहार'' कविकेँ निराला जकाँ तिरस्कार–भर्त्सना भेटिते छैक किन्तु दृढ़ संकल्पसँ युग–द्रष्टा एवं युग स्रष्टा ओएह बनैत अछि। जे गरल पान नहि करत, से संसारकेँ सुधादान कोना कऽ सकत।''

आधुनिक कविताक संदर्भमे राजकमल ई उक्ति समिचीन प्रमाणित भेल। वस्तुतः राजकमल आधुनिक कवितामे एकटा नव क्रान्तिक आह्वान कयलनि, जकर प्रमाण स्वरूप मैथिली कविता आन–आन भाषा यथा हिन्दी, बंग्ला, आदिक समकक्ष अपन स्थान रखैत अछि। मैथिली साहित्यमे हिनक प्रकाशित कविता सभ किछु 'स्वरगंधा' नामक काव्य संग्रह तऽ किछु 'कविता राजकमलक' नामक काव्य संग्रहमे संग्रहित अछि। 'स्वरगंधा'मे हिनक 31 गोट कविताक संग्रह कयल गेल अछि जकर प्रकाशन स्वयं राजकमल करौने छलाह। शेष बचल कविता सभ हिनक 'कविता राजकमलक' नामक संग्रहमे संग्रहित अछि मुदा तैयो विभिन्न पत्र–पत्रिकामे हिनक कविता सभ छिड़िआयल अछि। हिनक दुनू कविता संग्रह मैथिली महत्त्वपूर्ण कृति मानल जाइत अछि।

कविता राजकमलक माध्यमसँ मैथिली कविताक क्षेत्रमे एकटा बिहाड़ि सन उठि गेल छल। जतऽ कविता छन्द, लय आ शब्दाडम्बरक जालमे ओझरा कऽ फड़फड़ा रहल छल, राज दरबारसँ बाहर नहि आबि रहल छल, सामन्तक मनोरंजनक साधन बनल छल, ओतहि हिनक कविता निम्न–मध्यमवर्गीय जनताक विवशता, ओकर दुर्दशा आ ओकर दर्दक गाथाक स्टैण्ड बनल छल। समाजक अनेक राधाक बिकाइत देह, कामलोलुप समाजमे कृष्णक चुप्पीक सूचना ई अपन कविताक माध्यमसँ महाकवि विद्यापतिकेँ दैत छथि। दलान पर ताश–तसरंजक बिलासितामे मग्न अपन युवककेँ, सूतल जनसमुदायकेँ धिक्कारलनि, व्यंग्य कसलनि, जनमानसकेँ पाथरक मूर्तिक आगाँ हाथ जोड़ब बन्द कऽ मन्दिरसँ निकालि खेतक आरिपर जेबा लेल कहलनि, मेनका, उर्वशी, रम्भा आदि अनेक युवतीकेँ अपन विलासिताकेँ त्यागबा लेल कहलनि। यैह हिनक मूल भाव रहल अछि। ई अपन कविता सभमे नव प्रतीकक माध्यमसँ पुरान रूढ़ि, पुरान परम्पराकेँ तोड़लनि अछि। एकर प्रभाव मैथिली साहित्य मध्य एकटा धूमकेतु सदृश आयल अछि। कोनो साहित्यकारकेँ ओकर रचना अमरत्व प्रदान करबैत अछि। राजकमल भनहि अल्पायु भेलाह, मुदा हुनक रचना हुनका मैथिली साहित्यमे दीर्घायु बनाकऽ रखने अछि। राजकमल अँ एक्केटा कथा 'ललका पाग' लिखने रहितथि तैयो ओ मैथिली साहित्यमे अमर भऽ अपन प्रवाहसँ मैथिली साहित्यकेँ प्रभवित कयने रहितथि। जहिना हिन्दी साहित्यमे चन्द्रधर शर्मा गुलेरी श्उसने कहा थाश शीर्षक कथा लिखि भेल छथि।

निष्कर्ष

मैथिली साहित्यमे कथाक दृष्टिकोणसँ राजकमलक स्थान सर्वोपरि अछि। कथाक क्षेत्रमे ई एकटा युगक निर्माण कयने छथि। हिनक एक–एकटा कथा विश्व साहित्यक कथाक तुलनामे अपन स्थान सुरक्षित कयने अछि। राजकमल मैथिली कथा साहित्यक सबल हस्ताक्षरक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। मैथिली कथा साहित्यमे ई जाहि प्रकारक शिल्प आ शैली प्रस्तुत कयलनि से हिनकासँ पहिने मैथिली साहित्यमे प्रस्तुत नहि भेल छल। हिनक कथा सभमे जीवनक भोगल यथार्थ ओ अनुभूतिक सबल चित्रण भेल अछि। हिनक प्रायः अधिकांश कथामे भूख, आत्मरक्षा आ यौन पिपासाक चित्रण अनिवार्य रूपसँ भेल अछि, जकरा मैथिली साहित्य मध्य एतेक खुलिकऽ हिनकासँ पहिने नहि राखल गेल छल।

संदर्भ–सूची

1. महाकवि विद्यापति, शिवनन्दन ठाकुर, मैथिली अकादमी, पटना, 2011, पृ०– 306
2. स्वागंधा, राजकमल चौधरी, त्रिवेणी प्रकाशन, दरभंगा, 1959, पृ०– 4–5
3. राजकमल (विनिबन्ध), देवेन्द्र झा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2012, पृ०– 21
4. कारखाना, रमेश नीलकमल : तारानन्द, संजय प्रकाशन, पटना, भाग–2, 1988, पृ०– 9